६९ : सर्वमांगल्य

दिनांक १८-०६-२०१२

सर्वशुभ का नाम है सर्वमांगल्य | मानव जात के पास सद्बुद्धि सुलभ होना ही सर्व मांगल्य है | मानव ही चारों अवस्थाओं में संतुलित व्यवहार करने के अर्थ में देखा जाता है क्योंकि मनुष्येतर प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण, संतुलनपूर्वक व्यवहार किया जाता है | सम्पूर्ण प्रकृति अर्थात मानवेतर सम्पूर्ण प्रकृति को अपने स्वभाव गति में रहने देना, स्वयं मानव के साथ न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक जीना; यही जीने देना एवं जीने का तात्पर्य है | पांचों स्थितियों में संतुलन अर्थात व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र तथा दस सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में निर्विषमता रूप में जी पाना ही सर्वमांगल्य का स्वरूप है | ऐसा जी पाना मानव का हैसियत में है | इसका प्रमाण जी पाने में ही होता है | इसका तात्पर्य सर्वमानव अर्थात सर्वाधिक मानव समझदार होने से है | यह विकल्प रूप में प्रस्तुत हो चुका है | यह विकल्प परम्परा से भिन्न है | अभी तक समझदारी का स्वरूप व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में ही है | यह जंगल युग से अत्याधुनिक युग तक का आंकलित स्वरूप है | विकल्प विधि से विकसित चेतना में जीना होता है | अभी तक मानव जीव चेतना में जिया है | जीव चेतना में जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है | इसमें सफल हुआ है, यह सकारात्मक भाग है | यह उपलब्ध होते तक धरती बीमार हो गयी, प्रदूषण छा गयी | यह नकारात्मक भाग है | प्रदूषण के साथ धरती बीमार होने के कारण अर्थात धरती तापग्रस्त होने के कारण यह धरती मानव के रहने योग्य नहीं रहेगी, यह घोषणा वर्षों से सुनने में आ रहा है |

साथ ही परिस्थितियां भी बदल रही हैं | धरती जितना तापग्रस्त हुआ है उतना ताप और बढने से मानव के रहने योग्य धरती नहीं रहेगी, मानव समाप्त हो जायेगा | इसके मूल कारण में ध्यान देने पर पता लगता है कि मानव ही इस अपराध का कारक है | अभी तक जितने भी नाभिकीय परमाणु कार्यक्रम हुए हैं उन सबका शोध में यही देखने को मिला कि अजीर्ण परमाणुओं का मध्यांश अपने ईंधन के रूप में कितना ताप को उत्पन्न करता है इसका आंकलन होता है | ऐसे कार्यक्रम में जितने भी बार प्रयोग हुए, हर बार उत्पन्न ताप का ही आंकलन होता है; चाहे यह आकाश, जल, वायु कहीं भी किया हो | इससे उत्पन्न ताप धरती पर ही रहेगा या नहीं | इस प्रकार मानव अपराधी समझ में आता है | इस आधार पर औचित्यता को सोचा जा सकता है कि उक्त कृत्य मानव जाति के लिये अनुकूल नहीं है | इसके वाद विवाद के रूप में बताया जाता है कि इसके बिना मानव जाति का विकास नहीं हो सकता | कितना भी ताप पैदा करें उसका उपयोग ऊर्जा के रूप में ही होता है | अतः ऊर्जा के विकल्प को खोजना होगा | ऊर्जा प्राप्त करने के लिये विकल्प के रूप में प्रवाह बल, सूर्य ताप दोनों प्रधान सम्भावनाएं हैं | इसी के साथ तैलीय वृक्षों का विकास जिससे बायो डीजल तैयार हो सके, जो आकाश गमन के लिये योग्य हो | इन तीनों विधियों में आज के जितने भी प्रतीकात्मक धन हैं उनका उपयोग करना उचित होगा |

इसी विधि से हमें और उपायों को विकल्प रूप में उपयोग करना आवश्यक है | प्रयत्न भी चल रहा है | खनिज तेल, खनिज कोयला, परमाणु ऊर्जा के स्थान पर सूर्य ताप, प्रवाह बल, बायो डीजल, गैसीफायर, बायो गैस उपायों को व्यवहार रूप देने की आवश्यकता है | इन सभी उपायों को प्रत्येक ग्राम स्तर पर स्वायत्त बनाने की आवश्यकता है |

इस विधि से प्रचलित पेट्रोल, डीजल, कोयला, परमाणु ऊर्जा से छुटकारा पा सकते हैं | इनसे छुटकारा पाना ही प्रदूषण से मुक्ति होना है | जीवों से अच्छा जीने के लिये जो उपलब्धि है उसको मिटाना उद्देश्यनहीं है | जो वैभव अथवा महिमा हम बना पाये हैं उसे बनाये रखना है | महिमा का आशय न्याय, धर्म, सत्य तथा संतुलनपूर्वक जीना है | इस विधि से जी पाना ही विकसित चेतना में जी पाने का गवाही है | इसको पा लेना ही मानव का महिमा है | हर मानव महिमा सम्पन्न होना चाहता ही है | इसके लिये दूरगामी दृष्टि सम्पन्न होना आवश्यक है | इसके लिये ऊर्जा कार्यक्रम को सम्पन्न बनाना आवश्यक है | चेतना विकास का अध्ययन शैक्षणिक विधि से प्रस्तुत हो चुका है |

जीव चेतना में जीते हुए प्रदूषण से मुक्त होना सम्भव नहीं है | इस प्रकार से मानव को सोचना चाहिए | यह विकसित चेतना में पारंगत होने पर सम्भव है | इसे शैक्षणिक विधि से लोक सम्मुख प्रस्तुत कर चुके हैं | सर्व देश में प्रस्तुत करना शेष है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- **ए. नागराज**